अब है स्वतंत्र संकल्प

सदियों से पददलित देश यह
विवश कराह रहा था।
हर जेता बस इसे लूटकर
वैभव चाह रहा था।
मुट्ठीभर हिंसक बन बैठे
तलवारों के बल पर
कई युक्ति से विजयी, बैठे
सिंहासन पर छल कर।1।

धर्मप्राण यह प्रजा पात्र थी
क्या उन अतिचारों की
किसे भूल सकती दुर्वहता
कटुतर कर भारों की।
पर धन दारा हारक भोगी
स्वार्थी स्वजन निहन्ता।
कर सकता क्या कभी स्वप्न में
भी जन हित की चिन्ता।2।

पर्व तीज त्यौहार अनगिनत
उत्सव यात्रा मेले
जहाँ मनाए गये युगों से
त्रास उसी ने झेले।
पशुओं तक को जो अनाजयुत
देता था नित चारा
वही देश लुटकर निर्धन हो
दुर्भिक्षों से हारा।3।

प्यास न बुझती थी शोणित की
जिनकी तलवारों की
अब करते है बात यहाँ पर
निश दिन अधिकारों की।
पशुबल से पशुवत हांकी थी
विवश मूक सी नरता
करके याद पूर्व पापों को
अपराधी अब डरता।4।

कटी दासता की बेड़ी है
जिनके बलिदानों से
मुक्त हुआ मन जो पीड़ित था
जेता अभिमानों से।
मिली ज्ञानियों तक को पीड़ा
बुधजन को अवहेला
कौन कष्ट है शेष न जिसको
भारत ने है झेला।5।

भूलो सब वह दुखमय प्रकरण
कहते है अब बुधजन
नव संकल्प जगाओ कलुषित
करो न तुम अपना मन।
किन्तु नहीं जो जन लेते है
इतिवृत्तों से शिक्षा
उन्हें सुयाचित भी न काल
देता प्राणों की भिक्षा।6।

बली, वीर, विक्रमी, विवेकी,
त्यागी, धरानुरागी
चिर तक करते रहे महोद्यम
अविरत नर धृतिशाली।
तब प्रकटा स्वातंत्र्य प्रभाकर
भेद तिमिर अति गहरा
अब न लगा सकता है कोई
खल खुशियों पर पहरा।7।

पतनरात्रि से पूर्व उदित था
ज्ञान प्रभामय सविता
हमें याद है, मूढ़ न समझें
उसे काल्पनिक कविता।
छिन्न मूल तरू सम उतराता
प्रवहमान नित जल में
विस्मृत अखिल अतीत छला
जाता पर से पल–पल में।8।

हो सकता स्वातंत्र्य कभी क्या
उच्छृंखलता पोषक
क्या हो सकते मान्य यहाँ पर
नर शोणित के शोषक
परजीविता पुनः हो सकती
क्या जन–जन को मानित
हो सकते क्या पुनः देश में
अपराधी सम्मानित ।9।

नहीं बुद्धिजीवी हो सकता
निज संस्कृति का निन्दक
केवल मूढ़ यहाँ हो सकता
आश्रयतरू का कृन्तक।
पूर्वाधिप सुप्रशिक्षित जिनकी
अब भी तीव्र मनीषा
उन्हें हार लगती स्वाभाविक
प्राकृत नहीं जिगीषा।10।

जब तक जन विश्वास केशरी
नहीं मांद से लौटे।
तब तक ही चलते भ्रमदायक
त्राशक नीति मुखौटे।
परशासन है गया किन्तु है
आवश्यक अनुशासन
स्वरचित भव्यविधान सुशोभित
करे सदा ही आसन।11।

फिर होंगे हम विश्व मुकुट मणि
फिर प्रकटेगी गुरूता
अत्याचारी देखो निश दिन
प्राप्त कर रहे लघुता।
सही दिशा में अब जाएँगे
मन, मति, त्याग, तितिक्षा
जाग्रत है अब देश उदय की
अब अदम्य है इच्छा।12।

नव संकल्प उदित होते हैं
जब भी यहाँ उदय के
छद्म बुद्धिधर उन्हें बताते
बीज भेद के भय के।
जो मुट्ठीभर लोग भोगते रहे
सुचिर तक सत्ता
वे क्यों चाहँगे पुष्पित हो
नव शुभ लोक महत्ता।13।

हम है नहीं कृतघ्न भूल जो
जायें उपकारक को
अवनति गर्त निमग्न देश के
सद्यः उद्धारक को ।
प्राप्त हुआ अमरत्व जिन्हें
अरिकृत निर्मम मरणों में
विनत रहे यह शीश भारती –
पुत्रों के चरणों में।14।

अब है ज्ञेय गेय भी बहुशः
गाथा नरवीरों की
सीमा के रक्षक रिपुभक्षक
रणहरि रणधीरों की।
नमन उन्हें जो सतत प्राणपण
से करते हैं सेवा
इतर जन्तु उदरम्भरि स्वार्थी
बनते काल कलेवा।15।

दिनांक– 14/08/2018 शिव कुमार मिश्र

स्थान– भोपाल